संस्कृत

कक्षा – 9

सत्र 2019-20

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  | DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें? |  |
| विकल्प 1: अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।  विकल्प 2: Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोडबटन पर  tap करें। |

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें

|  |
| --- |
| DIKSHA को लांच करें—> App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें—>उपयोगकर्ता Profile का चयन करें |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
| पाठ्यपुस्तक में QR Code कोScan करने के लिए मोबाइल मेंQR Code tap करें। | मोबाइल को QR Code पर केन्द्रित करें। | सफलScan के पश्चातQR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी |

डेस्कटॉप परQR Codeका उपयोग कर डिजिटल विषय-वस्तु तक कैसे पहुँचें

|  |  |
| --- | --- |
| 1-QR Code के नीचे 6 अंकों काAlpha  Numeric Codeदिया गया है। | ब्राउजर में diksha. gov.in/cgटाइप करें। |
| सर्च बार पर 6 डिजिट का QR  CODE टाइप करें। | प्राप्त विषय-वस्तु की सूची से चाही गई विषय-वस्तु पर क्लिक करें। |

निःशुल्क वितरण हेतु

**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर**

**प्रकाशन वर्ष - 2019**



संचालक, एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

मार्गदर्शक : डॉ. पूर्वा भारद्वाज, दिल्ली, डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री, दिल्ली

सहयोग : त्रिपुरारि कुमार ठाकुर

समन्वयक : डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, एस.सी.ई.आर.टी. छ.ग.

विषय समन्वयक : बी.पी. तिवारी, सहायक प्राध्यापक, एस.सी.ई.आर.टी. छ.ग.

लेखन समूह : बी.पी. तिवारी, ललित कुमार शर्मा, स्वरूपनारायण मिश्र,

योगेश्वर उपाध्याय, रतिराम पटेल, पुरुषोत्तम देशमुख

चित्रांकन : राजेंद्र ठाकुर

ले आउट : रेखराज चौरागड़े, सुरेश कुमार साहू

**प्रकाशक**

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

**मुद्रक**

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ........................

**आमुख**

माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करना है। संस्कृत शिक्षण के माध्यम से छात्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना व मानवीय मूल्यों का सतत विकास करना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुरूप छात्रों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग एवं विभिन्न कौशलों के विकास पर बल दिया गया है। नवीन पाठ्यपुस्तक में छŸाीसगढ़ प्रदेश के वनों, छŸाीसगढ़ की विभूतियों, पौराणिक एवं अर्वाचीन कथाओं, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए ब्रेललिपि और पर्यावरण आदि से संबंधित पाठों का समावेश किया गया है, जैसे-छत्तीसगढ़स्य वनानि, श्रीगहिरागुरुः, ब्रेललिपिः आदि। पाठों में सरल संस्कृत अभ्यास प्रश्न व गतिविधियों को अधिकाधिक महत्त्व दिया गया है। छात्र संस्कृत को व्यवहारगत बनाकर संस्कृत में वार्तालाप कर सकें, ऐसा प्रयास किया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में राष्ट्रीय स्तर के महत्त्वपूर्ण शिक्षा मंडलों की पाठ्यपुस्तकों का सहयोग व मार्गदर्शन लिया गया है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो-वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पाठ्य पुस्तक को स्वरूप प्रदान करने में जिन विशेषज्ञों की सहभागिता रही है, परिषद् उनके प्रति आभार प्रकट करती है। निश्चय ही यह पुस्तक छात्रोपयोगी सिद्ध होगी। नवीन पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने में विज्ञजनों के बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

**संचालक**

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

**भूमिका**

भाषाई इतिहास की दृष्टि से संस्कृत का इतिहास अत्यंत प्राचीन है - हजारों वर्षों का। संस्कृत यूरेशिया यानी यूरोप और एशिया भूखंड के भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है। इसे भौगोलिक रूप से सबसे अधिक व्यापक और साहित्यिक उत्कर्ष की दृष्टि से सर्वोपरि माना जाता है।

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। इसका साहित्यिक प्रवाह वैदिक युग से आज तक अबाध गति से चल रहा है। इसकी महिमा को देखकर इसे देवभाषा कहा गया है। यह अधिसंख्यक भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका मानी जाती है।

संस्कृत भाषा के प्राचीनतम ग्रंथ हैं वेद। कहा जा सकता है कि वेद आर्यों की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के एकमात्र साधन हैं। भारतवर्ष में क्षेत्रीय विषमताओं के होने पर भी जिन तत्त्वों ने इस देश को एक सूत्र में बाँध रखा है, उनमें संस्कृत भाषा तथा इसके साहित्य का योगदान रहा है। मानवीय मूल्यों के विकास की दृष्टि से भी इनका अद्वितीय महत्त्व है।

संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य हैं -

1. संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान कराना जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर छात्र समझ सकें एवं मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति दे सकें।

2. संस्कृत साहित्य के प्रति छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न करना।

3. संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं, प्राचीन और नवीन रचनाओं से छात्रों को परिचित कराना।

4. छात्रों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए नवमी कक्षा की ‘सलिला’ नामक पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इसमें प्राचीन रचनाओं के साथ आधुनिक संस्कृत रचनाओं का भी समावेश किया गया है। कुछ पाठों के आंरभ में पाठ के संदर्भ दिए गए हैं ताकि छात्रों को पाठ-प्रवेश में आसानी हो। छात्रों की सुविधा के लिए ‘शब्दार्थाः’ शीर्षक के अंतर्गत पाठ में आए नवीन शब्दों के हिन्दी में अर्थ दिए गए हैं।

कुछ पाठों के अंत में पाठ की विषयवस्तु को पूरी तरह खोलने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्री दी गई है। जैसे ’भारतीवसन्तगीतिः’ के अंत में सारे श्लोकों का अन्वय और अर्थ बताया गया है। वहीं ’प्रत्यभिज्ञानम्’ पाठ में केवल एक श्लोक है जिसका अर्थ अंत में दिया गया है। इसी तरह ’भ्रान्तो बालः’ पाठ के अंत में ’पाठयामास’ या ’बोधयामास’ जैसे अपेक्षाकृत रूप से कम प्रचलित शब्दों के बारे में बताया गया है।

पाठों के साथ आनेवाले चित्र न केवल रोचकता बढ़ाते हैं बल्कि विषयवस्तु को नया आयाम देते हैं। छत्तीसगढ़ की लोक शैली के पुट और चटक रंगों ने इन चित्रों को और अधिक सुंदर बना दिया है।

पाठ्यपुस्तक के अंत में व्याकरण खंड है। उसमें छात्रों की आवश्यकतानुसार संक्षेप में व्याकरण के नियमों को प्रस्तुत किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में वर्तनी से संबंधित परसवर्ण के नियमों को कहीं-कहीं शिथिल किया गया है। सामान्यतः भाषा की प्रवृत्ति सरलीकरण की होती है। इस लिए वर्तनी के सरलीकृत रूप को हमने मान्यता दी है। जैसे - ‘गङ्गा’ के स्थान पर ‘गंगा’ और ‘चञ्चल’ के स्थान पर ‘चंचल’।

हम जानते हैं कि कक्षा में बच्चे विविध भाषाओं की संपदा लेकर आते हैं और यह बहुभाषिकता संसाधन है। इसलिए शिक्षक कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक को छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसको और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है।

**संचालक**

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

**अनुक्रमणिका**

**क्रमांक पाठ पृष्ठ क्रमांक**

 वन्दना 01

1 सम्भाषणम् संवादपाठः 02-05

2 न त्यक्तव्यः अभ्यासः गद्यपाठः 06-09

3 छत्तीसगढ़स्य वनानि गद्यपाठः 10-13

4 सुभाषितानि पद्यपाठः 14-18

5 प्रत्यभिज्ञानम् गद्यपाठः 19-24

6 सन्तश्रीगहिरागुरुः गद्यपाठः 25-28

7 ब्रेललिपिः गद्यपाठः 29-33

8 सिकतासेतुः गद्यपाठः 34-40

9 रघुवंशम् पद्यपाठः 41-46

10 विश्वबन्धुत्वम् गद्यपाठः 47-50

11 भारतीवसन्तगीतिः पद्यपाठः 51-55

12 लौहतुला गद्यपाठः 56-60

13 भ्रान्तोः बालकः गद्यपाठः 61-66

व्याकरणखण्डम् 67-136